



https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

कावासाकी रोग

के संस्करण 2016

1. कावासाकी क्या है ?

1.1 यह क्या है ?

यह रोग पहली बार अंग्रेजी चिकित्सा साहित्य में 1967 में एक जापानी बालरोग विशेषज्ञ द्वारा बताया गया था (इस रोग का नाम उनके नाम पर रखा गया है)। उन्होंने बुखार, त्वचा पर लाल चकत्ते, लाल आँखें, गले और मुँह की लाली, हाथों और पैरों में सूजन और गर्दन में बड़े लम्फ नोड्स के साथ बच्चों के एक समूह की पहचान की। शुरु में इस रोग को म्यूकोक्यूटेनियस लम्फ नोड सिंड्रोम कहा जाता था। कुछ साल बाद हृदय जटिलताओं जैसे कोरोनरी धमनियों के एन्यूरिज्म (इन रक्त वाहिकाओं का फैलना) की जानकारी मिली। कावासाकी रोग एक तीव्र प्रणालीगत वैस्कुलाइटिस है, जिसका अर्थ है कि शरीर की किसी भी मध्यम धमनियों मुख्य रूप से कोरोनरी धमनियों में सूजन होती है और उनमें एन्यूरिज्मस बन सकते हैं। हालांकि अधिकतर बच्चे सिर्फ तीव्र लक्षण दिखाएंगे और दिल की कम्प्लीकेशन्स नहीं होंगी।

1.2 यह कतिना आम है ?

केडी एक दुर्लभ बीमारी है। लेकिन बचपन की अन्य आम वेस्कुलाइटिस की बीमारी जैसे कि हनिकोस्कोनलेन परप्युरा के समान आम बीमारी है। कावासाकी रोग को दुनिया भर में वर्णन किया गया है। हालांकि यह बीमारी जापान में ज्यादा आम है। यह लगभग विशेष रूप से छोटे बच्चों की एक बीमारी है। इस बीमारी के लगभग 85% बच्चे 5 साल से कम की उम्र के होते हैं। 18-24 महीने की उम्र के बच्चों में यह सबसे ज्यादा आम है। 3 महीने से कम और 5 साल से ज्यादा के बच्चों में यह बीमारी कम पाई जाती है। परन्तु इन बच्चों में कोरोनरी एन्यूरिज्म बनने का खतरा ज्यादा होता है। लड़कियों की तुलना में लड़कों में अधिक आम है। हालांकि साल के किसी भी समय में इस बीमारी के मामले पाए जा सकते हैं, पर कुछ मौसमी भी पाई जाती है। देर की सर्दियों में और बसंत ऋतु में इनकी संख्या में वृद्धि होती है।

1.3 इस बीमारी के कारण क्या है ?

केडी के कारण अस्पष्ट है हालांकि संक्रामक उत्पत्ति एक ट्रिगर होने का संदेह है। अतिसंवेदनशीलता या संक्रामक एजेंट द्वारा शुरु की गई अव्यवस्थिति प्रतिक्रिया, एक सृजन प्रक्रिया शुरु कर सकती है।

1.4 क्या यह वरिष्ठत में मली है ? मेरे बच्चों को यह बीमारी क्यों है ? क्या इससे बचाया जा सकता है ? क्या यह संक्रामक है ?

केडी एक वंशानुगत बीमारी नहीं है, हालांकि एक अनुवंशिक गड़बड़ी का संदेह है। ऐसा बहुत दुर्लभ है कि एक ही घर में इस बीमारी से दो सदस्य ग्रसति हो। यह संक्रामक नहीं है। वर्तमान में, इस बीमारी से बचने का कोई तरीका नहीं है। एक बच्चे में इस बीमारी का दोबारा होना संभव है, परन्तु बहुत दुर्लभ है।

1.5 मुख्य लक्षण क्या है ?

बीमारी अस्पष्टीकृत तेज बुखार के साथ प्रस्तुत करता है। बच्चा आमतौर पर चड़िचड़ा होता है। बुखार शुरु होने के साथ-साथ कुछ दिन बाद आँखें लाल हो जाती हैं, परन्तु कोई मवाद या सूत्राव के बिना। बच्चे में विभिन्न प्रकार के त्वचा के चकते बन जाते हैं। जैसे कि खिसरे या स्कारलेट फीवर की तरह, लाल रंग के दाने, पेप्यूलस आदि। त्वचा के चकते ज्यादातर ट्रंक और हाथ पैरों पर और डायपर क्षेत्र में होते हैं और यह त्वचा पर लालिमा ला सकता है या उसे छील सकता है।

मुंह में परिवर्तन जैसे चमकदार लाल फटे होंठ, जीभ लाल (आमतौर पर स्ट्राबेरी जीभ कहा जाता है) और ग्रसनी में लाली हो सकती है। हाथ और पैरों में लाली और सूजन आ सकती है। हाथों और पैरों की अंगुलियों में सूजन आ सकती है। इसके बाद त्वचा एक विशेष तरह से छलिना शुरु होती है, यह अंगुलियों की नोक से शुरु होती है (दूसरे से तीसरे हफ्ते में)। आधे से ज्यादा बच्चों में गर्दन का एक लम्फ नोड बढ़ जाता है, ज्यादातर 1.5 सै.मी. से ज्यादा और सिर्फ एक ही तरफ।

कभी-कभी अन्य लक्षण जैसे जोड़ों में दर्द या सूजन, पेट में दर्द, दस्त, चड़िचड़ापन या सरिदर्द भी हो सकते हैं। जनि देशों में बी.सी.जी. का टीका दिया जाता है (जो कि टीबी की बीमारी से बचाता है), छोटे बच्चों में उस नशान क्षेत्र का लाल होना भी देख सकता है। हृदय का शामिल होना इस बीमारी का सबसे गंभीर लक्षण है। इससे लंबी अवधि जटिलताओं की संभावना होती है। दिल में मरमर्स, ताल गड़बड़ी और अल्ट्रासाउण्ड असामान्यताएं हो सकती हैं। दिल की सभी परतों में थोड़ी सूजन आ जाती है। पेरिकार्डिटिस (हृदय की बाहरी झल्लर की सूजन), मायोकार्डिटिस (हृदय की मांसपेशी की सूजन) और वाल्व भी शामिल हो सकती हैं। हालांकि इस बीमारी की मुख्य विशेषता कोरोनरी धमनियों में एन्यूरिज्म बनना है।

1.6 क्या यह बीमारी सब बच्चों में एक जैसी होती है ?

रोग की गंभीरता हर बच्चे में अलग होती है। सारे लक्षण हर बच्चे में नहीं होते और हृदय का प्रभावित होना भी ज्यादातर रोगियों में नहीं होता है। जनि बच्चों को इलाज मिलता है, उनमें

100 में से लगभग 2 से 6 बच्चों में एन्यूरजिम बनते हैं । कुछ बच्चों में (विशेष रूप से 1 वर्ष से छोटे) यह बीमारी अधूरे रूप से आती है, जिसका अर्थ है कि उनमें बीमारी के सारे लक्षण नहीं दिखाई देते, जिससे नदान और अधिक कठिन हो जाता है । इनमें से कुछ बच्चों में एन्यूरजिम भी बन जाते हैं । इन्हें असामान्य केडी का नदान दिया जाता है ।

1.7 क्या बच्चों में यह बीमारी बड़ों से कुछ अलग होती है ?

यह ज्यादातर बच्चों की बीमारी है , हालांकि वयस्कता में केडी की रपिपोर्टस बहुत कम हैं ।